मंथन

वर्ष 11 अंक 1 15 अगस्त 2017

स्टाफ क्लब
सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान
पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत।

मंथन

स्टाफ क्लब, सी.एस.आई.आर.- आई. एच. बी. टी., पालमपुर

वर्ष 11 अंक 1 15 अगस्त 2017

आमुख

आपके स्टाफ क्लब की पत्रिका "मंथन" का 19 वां अंक आपके समकक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्‌यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोल कर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते आप उन्हें मंथन के माध्यम से लघुलेख, कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता या अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है-भावनाओं का मंथन"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए प्रविष्टियां देने की कृपा करें ताकि मंथन का अगला अंक समय से निकला जा सके। भाषा हिन्दी या अंग्रेजी हो सकती हैं।

इस अंक में प्रविष्टियां देने वालों एवं सहयोग प्रदान करने वालों का स्टाफ क्लब की ओर से धन्यवाद।

राकेश कुमार सूद एंव मुखत्यार सिंह

संपादक

विषय सूची

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

वर्ष 11 अंक 1 15 अगस्त 2017

>>

Sr.No.	Title	Author	Page
1.	भारत के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति श्रीमान रामनाथ कोविन्द जी....	मुखत्यार सिंह	4
2.	वर्षा रानी	विवेक दास	7
3.	THE WORLD I DREAM …..	Shaivi Uniyal	8
4.	आई.एच.बी.टी. परिवार के बच्चों की कृतियाँ		
		Amodini Rishi	9
		Priyanka	10
		Shritashi	11
		Askini Shanrma	12
		Ayush Yadav	13
		Pragnay	14
		Brahmi Uniyal	15
		Ani Aganihotri	16
		Trisha	17
		Ridhima	18
		Tavish Bisht	19
		Priyanshu Bisht	20
5.	मेट्रो मैन' ई. श्रीधरन	श्री संजय कुमार	21

भारत के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति श्रीमान रामनाथ कोविन्द जी का साक्षिप्त जीवन परिचय

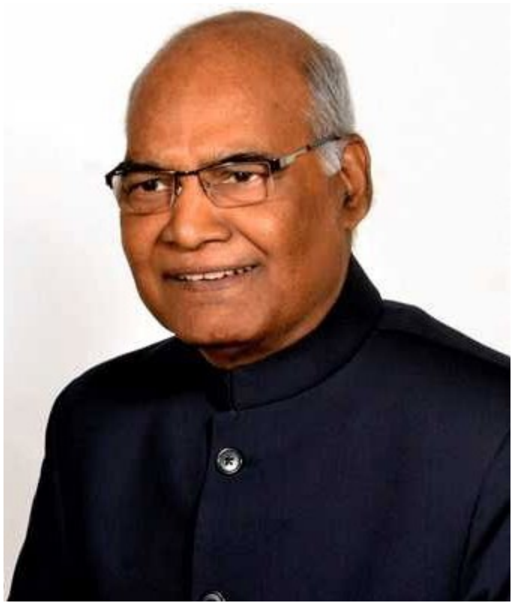

श्रीमान रामनाथ कोविन्द जी 20 जुलाई 2017 को भारत के 14वें राष्ट्रपति चुने गए। वह राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंठन के उम्मीदवार थे और उन्होंने विपक्षी उम्मीदवार श्रीमती मीरा कुमार को हरा कर जीत प्राप्त की। श्रीमान कोविन्द जी को भारत के सर्वोच्च न्यायलय के मुख्य न्यायधीश श्रीमान जगदीश सिंह खेहर ने 25 जुलाई 2017 को भारत के संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में शपथ दिलाई। श्रीमान कोविन्द जी का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के एक छोटे से गाँव परौंख, तहसील डेरापुर ,कानपुर में 1 अक्तूबर 1945 को पिता स्वर्गीय माईकू लाल जी तथा माता स्वर्गीय श्रीमती कलावती जी के घर में हुआ। उनकी शादी श्रीमती सविता जी से 30 मई 1974 को हुई। इनके दो बच्चे जिनमें एक सपुत्री स्वाति तथा एक सुपुत्र प्रशान्त कुमार हैं। वह राजनीति और सामाजिक बदलाव के अतिरिक्त कानून, इतिहास, और धार्मिक पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखते हैं। सार्वजनिक जीवन में रहते उन्होंने देश में कई यात्राओं के साथ ही उन्होंने सांसद रहते थायलैंड, नेपाल, पाकिस्तान, सिंगापुर, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन एंव अमरीका की भी यात्राएँ की हैं। इन्होंने कानपुर विश्विद्यालय से बी.कॉम. और एल.एल.बी. की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने सिविल सर्विसेस की परीक्षा भी पास की लेकिन मनमाफिक पोस्टिंग न मिलने पर उन्होंने इसे त्याग दिया। वह 1971 में दिल्ली बार काउंसिल के नामांकित एडवोकेट हो गये। वह 1977 से 1979 तक केन्द्र सरकार के दिल्ली उच्च न्यायलय में अधिवक्ता

रहे तथा 1980 से 1993 तक केन्द्र सरकार के सर्वोच्च न्यायलय में स्थायी अधिवक्ता के पद पर रहे। श्रीमान कोविन्द जी ने 1977 में प्रधानमंत्री श्रीमान मोरारजी देसाई के निजी सचिव का कार्य बखूबी संभाला था।

इन्होंने 16 वर्ष के एक लंबे समय के लिए दिल्ली उच्च न्यायलय और सर्वोच्च न्यायलय में वकालत में भी हाथ आजमाए। श्रीमान रामनाथ कोविंद जी वर्ष 1991 में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) में शामिल हो गए। आरंभ में वह पार्टी के प्रवक्ता के पद पर रहे। वह बीजेपी के दलित मोर्चे के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर भी रहे। श्रीमान कोविंद जी कुष्ठ रोगियों के लिए काम करने वाली संस्था दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संरक्षक भी रहे हैं।

श्रीमान कोविन्द जी ने कानून निर्माण के क्षेत्र में 12 वर्ष तक (1994 से 2000 तथा 2000 से 2006) दो बार संसद के ऊपरी सदन राज्य सभा के सांसद रहते हुये अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने संसद की विभिन्न समितियों जैसे कि चेयरमैन, राज्य सभा हाउस समिति एंवम इसके अतिरिक्त वह अन्य संसदीय समितियों के सदस्य रहे जिनमें अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति कल्याण, गृह मामलों, पेट्रोलियम एंवम प्राकृतिक गैस, सामाजिक न्याय एंवम अधिकारिता मामले इत्यादि में उल्लेखनीय योगदान दिया। इन्होंने 16 अगस्त 2015 को बिहार राज्य के राज्यपाल के पद की शपथ ली 20 जुलाई 2017 को इन्होंने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के भारत के राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए उम्मीदवार घोषित होने पर त्यागपत्र दे दिया।

इन्होंने अक्तूबर 2002 में संयुक्त राष्ट्र में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुये जनरल एसेंबली को प्रभावी ढंग से संबोधित किया। इन्होंने उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के ग्रामीण आंचल में शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य किया। अपनी कुशाग्र बुद्दि का परिचय देते हुये समाज के पिछड़े एंवम कमज़ोर वर्गों को कानूनी सहायता प्रदान करते रहे।

भारतीय संविधान की धारा 54 में राष्ट्रपति के पद के विषय में वर्णन किया गया है।

इसमें वर्णित है कि राष्ट्रपति का चुनाव एक चुनाव कालेज के द्वारा होगा जिसमें संसद के दोनों सदन- राज्य सभा और लोक सभा तथा राज्य एंव दो केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली एंव पॉडिचेरी की की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य शामिल होते हैं। राष्ट्रपति के पद पर चुनाव लड़ने के लिए एक व्यक्ति को भारत का नागरिक होना चाहिए, वह 35 वर्ष की आयु प्राप्त कर चुका हो और वह केन्द्र, राज्य, स्थानीय एंवम दूसरे किसी एजेंसी में किसी भी लाभ के पद पर नहीं होना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसकी मानसिक स्थिति ठीक होनी चाहिए।

राष्ट्रपति का कार्यकाल समानतः पाँच वर्ष का होता है। वह इससे पहले अपनी इच्छा से उपराष्ट्रपति को अपना त्यागपत्र सौंप कर पदमुक्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें संविधान के उल्लंगन पर संसद के दोनों सदन में से किसी एक उनके विरुध महाभियोग शुरू किया जा सकता है और दो तिहाई बहुमत से प्रस्ताव पास करके उन्हें पद से हटाया जा सकता है। भारत के राष्ट्रपति पद में कार्यकारी, विधायी, आपातकालीन, कूटनितिक, न्याय एंव सेना से संबंधित असीम शक्तियाँ निहित हैं। राष्ट्रपति का वेतन एंव भत्ते संसद द्वारा निर्धारित होते हैं, वर्तमान में राष्ट्रपति का वेतन डेढ़ लाख रुपये है जिसमें अन्य भत्ते शामिल नहीं हैं।

भारत के राष्ट्रपति का सरकारी निवास स्थान राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में है। इसमें भवन में 340 कमरें हैं। यह विश्व में किसी भी राष्ट्राध्यक्ष के आवास से बड़ा आवास है। इस भवन की खास बात है कि इस भवन के निर्माण में लोहे का नगण्य प्रयोग हुआ है। यह एक नायाब भवन है जिसे देखने को दिल में इच्छा जागृत होती है। आप ऑनलाइन link on the website 'presidentofindia.nic.in' पर बुक करके राष्ट्रपति भवन को देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति भवन में एक बहुत ही सुन्दर मुग़ल उद्यान है। यह उद्यान आम जनता के देखने के लिए हर वर्ष फरवरी माह में दो सप्ताह के लिए खुला रहता है।

मुखत्यार सिंह

वर्षा रानी

आई आई वर्षा रानी,
सुनाता हूँ मैं इसकी कहानी,
कभी रिम-झिम कभी झम-झम,
लगती है यह बहुत सुहानी|
सावन में यह आती है,
गुन-गुन गाना गाती है,
दिन-रात बरसते-बरसते,
सब कुछ भिगोती जाती है।
चारों तरफ हरियाली ही हरियाली,
बगीचा को सजाती है,
छाता लेके ना निकले तो,
तुम्हें जरूर भिगोती है।
भीगी सड़के उसपर कीचड़,
निकलना ना चाहे कोई बाहर,
कपड़े भी नहीं सूखते है,
फिर भी वर्षा भाती है।
रात को बिजली कड़कती है,
घर की बिजली चली जाती है,
काले आसमान में एक रोशनी की चमकाहट,
सबको डरा के जाती है।
ऐसा करते-करते एक दिन,
वर्षा रानी चली गई,
अगले साल फिर जरुर आना,
लेकर अपना रुप यही।

विवेक दास

THE WORLD I DREAM …..

Oh my lord! Free me from worldly ties,
I don’t want to limit my life but fly high in the skies.

I want to put the colours of rainbow on my face,
And dance with clouds in their pace.

I want to roar like ocean waves,
And spread love through my ways.

I want to tickle the world by wiping off miseries,
And bring a smile on every face that I see.

Let all sorrows be gone and peace everywhere,
This beautiful Earth, let us all share.

And make the Earth smile, through flowers everywhere,
……………. through flowers everywhere.

By – Shaivi Uniyal

Made by: Amodini Rishi

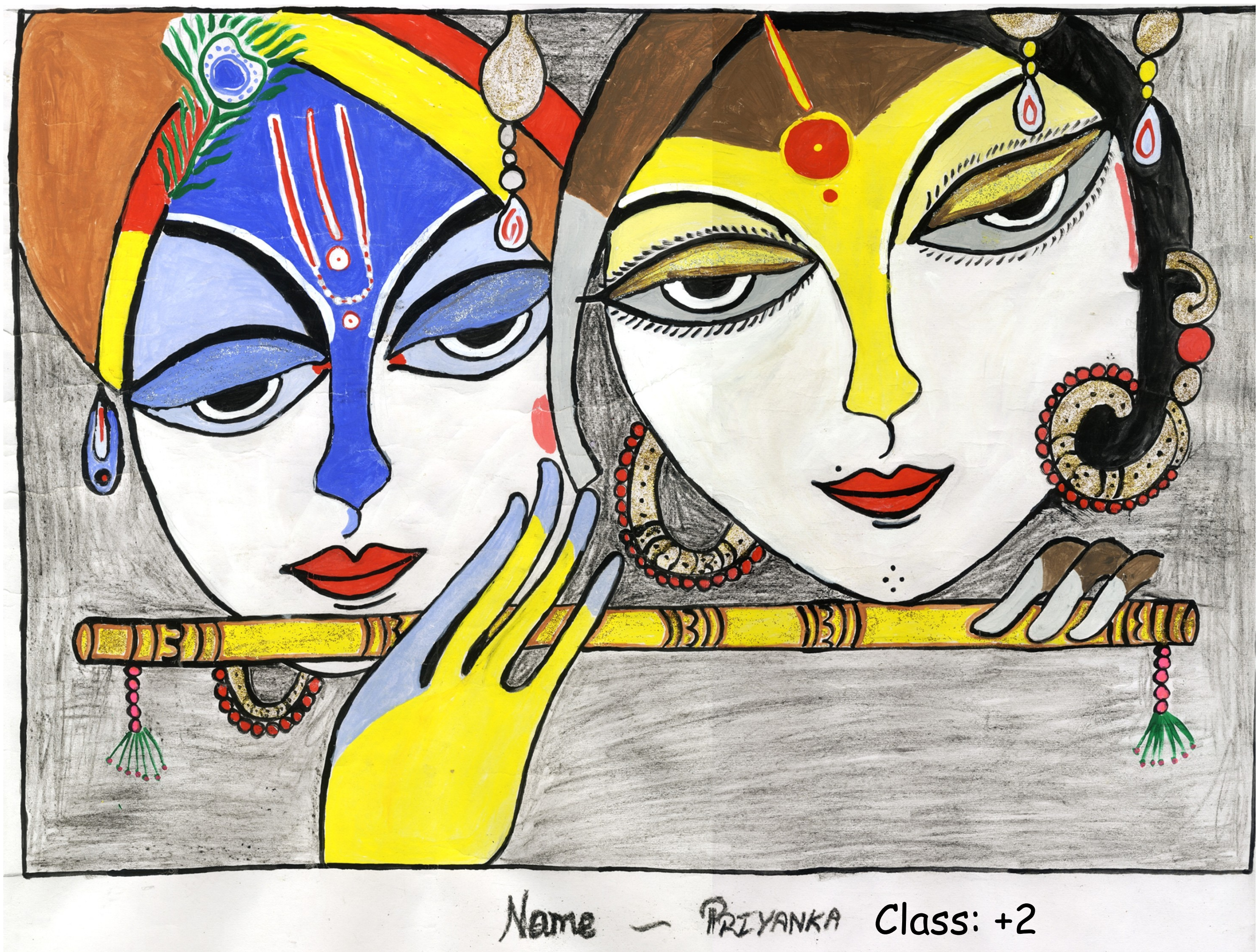

Made by: Priyanka

Made by: Shritashi

Made by: Askini Sharma

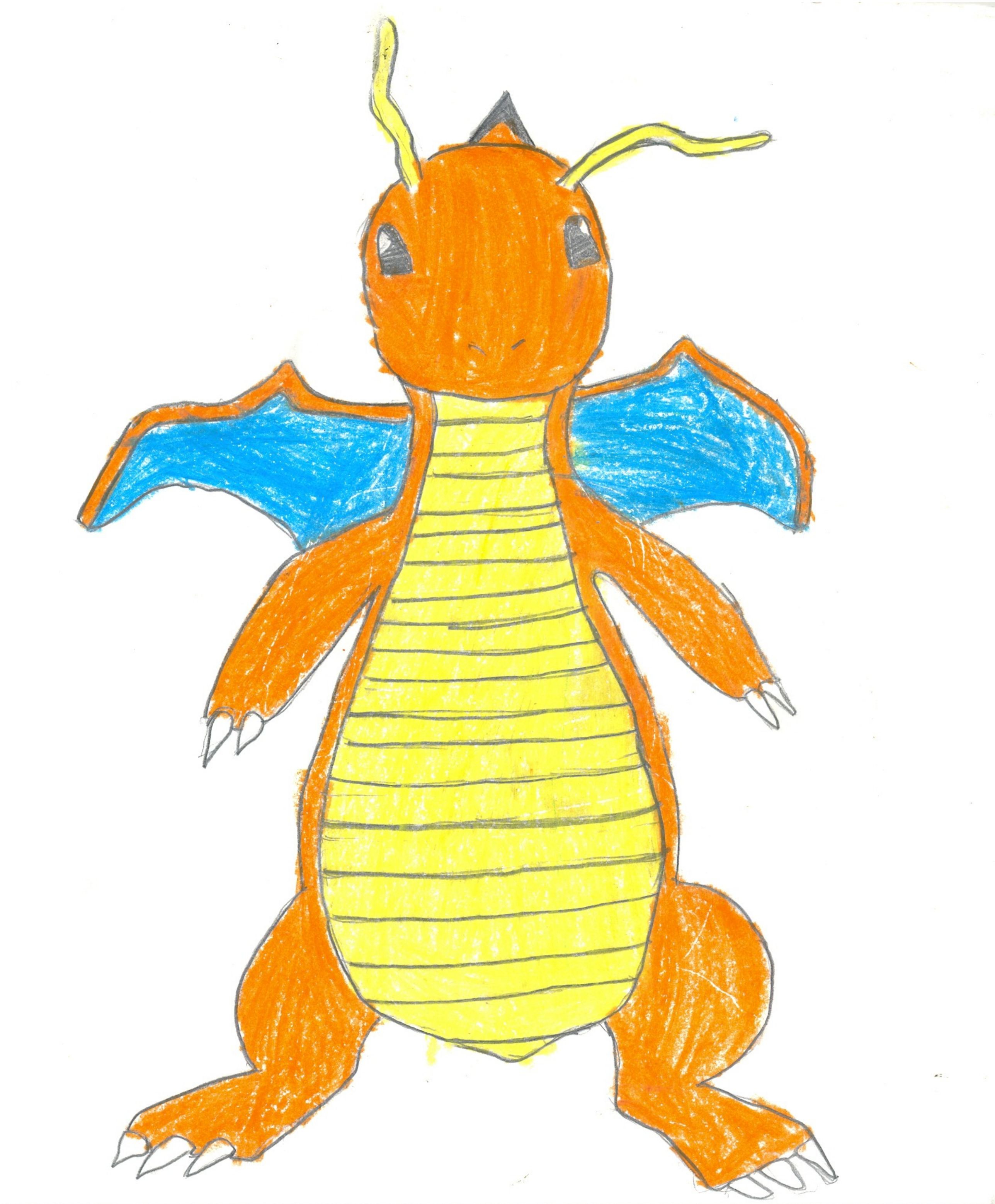

Made by: Ayush Yadav

CARTOON CHARACTERS

Made by: Pragnay Gautam

Made by: Brahmi Uniyal

Made by: Ani Aganihotri

Made by: Trisha

Made by: Ridhima

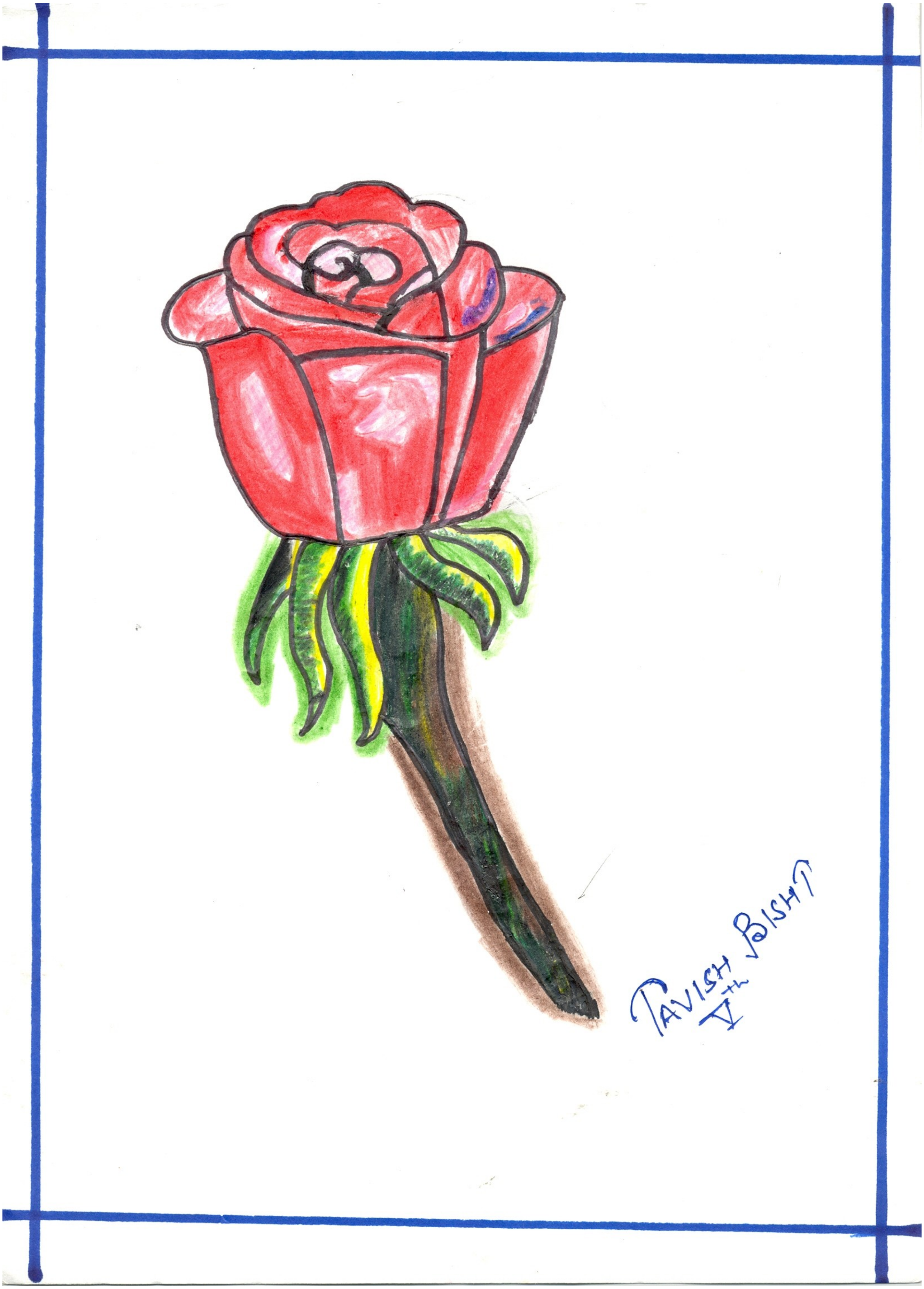

Made by: Tavish Bisht

Made by: Priyanshu Bisht

मेट्रो मैन' ई. श्रीधरन

पद्म श्री, पद्म विभूषण, नाइट ऑफ़ द लीजन ऑफ़ हॉनर, लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, मानद डॉक्टरेट डा. ई. श्रीधरन एक प्रख्यात भारतीय सिविल इंजीनियर हैं। भारत में उन्हें 'मेट्रो मैन' के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने अपने नेतृत्व में 'कोंकण रेलवे' और 'दिल्ली मेट्रो' का निर्माण कर भारत में जन यातायात को बदल दिया। देश और समाज के प्रति उनके महत्वपूर्ण कार्यों और योगदान के मद्देनजर भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' (2001) और 'पद्म विभूषण' (2008) जैसे नागरिक पुरस्कारों से सम्मानित किया। सन 2003 में 'टाइम' पत्रिका ने उन्हें 'वन ऑफ़ एशिआज हीरोज' में शामिल किया। सन 2013 में उन्हें जापान के 'ऑर्डर ऑफ द राइजिंग सन- गोल्ड एंड सिल्वर स्टार' से सम्मानित किया गया।

प्रारंभिक जीवन

ई. श्रीधरन का जन्म 12 जून 1932 को केरल के पलक्कड़ में पत्ताम्बी नामक स्थान पर हुआ था। उनके परिवार का सम्बन्ध पलक्कड़ के 'करुकपुथुर' से है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा पलक्कड़ के 'बेसल इवैंजेलिकल मिशन हायर सेकेंडरी स्कूल' से हुई जिसके बाद उन्होंने पालघाट के विक्टोरिया कॉलेज में दाखिला लिया। उसके पश्चात उन्होंने आन्ध्र प्रदेश के काकीनाडा स्थित 'गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज' में दाखिला लिया जहाँ से उन्होंने 'सिविल इंजीनियरिंग' में डिग्री प्राप्त की।

इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद कुछ समय तक श्रीधरन ने कोझीकोड स्थित 'गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक' में सिविल इंजीनियरिंग पढ़ाया। उसके बाद लगभग एक साल तक उन्होंने बॉम्बे पोर्ट ट्रस्ट में बतौर प्रसिक्षु कार्य किया। इसके पश्चात सन 1953 में वे भारतीय लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित 'इंडियन इंजीनियरिंग सर्विसेज एग्जाम' में बैठे और उत्तीर्ण हो गए। उनकी पहली नियुक्ति दक्षिण रेलवे में 'प्रोबेशनरी असिस्टेंट इंजिनियर' के तौर पर दिसम्बर 1954 में हुई।

सन 1964 एक तूफ़ान के कारण रामेश्वरम को तमिल नाडु से जोड़ने वाला 'पम्बन पुल' टूट गया। रेलवे ने इस पुल के जीर्णोद्धार और मरम्मत के लिए 6 महीने का समय दिया पर श्रीधरन के बॉस ने सिर्फ तीन महीने में इस कार्य को पूरा करने को कहा और श्रीधरन को यह कार्य सौंपा गया। श्रीधरन ने यह कार्य मात्र 46 दिनों में पूरा कर सबको चकित कर दिया। इस उपलब्धि के लिए उन्हें 'रेलवे मंत्री पुरस्कार' दिया गया।

सन 1970 में इ. श्रीधरन को भारत के पहले मेट्रो रेल 'कोलकाता मेट्रो' की योजना, डिजाईन और कार्यान्वन की जिम्मेदारी सौंपी गयी। श्रीधरन ने न सिर्फ इस अग्रगामी परियोजना को पूरा किया बल्कि इसके द्वारा भारत में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर इंजीनियरिंग की आधारशिला भी रखी। श्रीधरन ने अक्टूबर 1979 में कोचीन शिपयार्ड ज्वाइन किया। इस समय यह अनुत्पादकता के दौर से गुजर रही थी। शिपयार्ड का पहला जहाज़ 'एम.वी. रानी पद्मिनी' अपने लक्ष्य से बहुत अधिक विलंबित था पर उन्होंने अपने अनुभव, कार्यकुशलता और अनुशासन से शिपयार्ड का कायाकल्प कर दिया और यह सुनिश्चित किया कि उनके नेतृत्व में ही यहाँ का पहला जहाज़ बनकर निकले। सन 1981 में उनके नेतृत्व में ही कोचीन शिपयार्ड का पहला जहाज़ 'एम.वी. रानी पद्मिनी' बनकर बाहर निकला।

कोंकण रेलवे

जुलाई 1987 में उन्हें पदोन्नत कर पश्चिमी रेलवे में जनरल मैंनेजर बना दिया गया और जुलाई 1989 में वे रेलवे बोर्ड का सदस्य बना दिए गए। जून 1990 में उनको सेवानिवृत्त होना था पर सरकार ने उनको बता दिया था कि देश को उनकी सेवाओं की और आवश्यकता है। इस प्रकार सन 1990 में उन्हें कॉन्ट्रैक्ट पर लेकर कोंकण रेलवे का चीफ मैनेजिंग डायरेक्टर बना दिया गया। उनके नेतृत्व में कंपनी ने अपना कार्य साथ वर्षों में पूरा किया। कोंकण रेलवे परियोजना कई मामलों में अनोखी रही। यह देश की पहली बड़ी परियोजना थी जिसे BOT (ब्युल्ट-ऑपरेट-ट्रान्सफर) पद्धति पर कार्यान्वित किया गया था। इस संगठन का स्वरुप भी रेलवे की किसी और परियोजना से भिन्न था। लगभग 82 किलोमीटर के एक स्ट्रेच में इसमें 93 टनल खोदे गए थे। परियोजना की कुल लम्बाई 760 किलोमीटर थी जिसमें 150 पुलों का निर्माण किया गया था। कई लोगों के लिए यह आश्चर्य की बात थी कि एक सार्वजनिक क्षेत्र की

परियोजना बिना बिलंभ और बजट बढ़ाये लगभग अपने नियत समय पर पूरी हो गयी थी।

दिल्ली मेट्रो

इ. श्रीधरन को दिल्ली मेट्रो का मैनेजिंग डायरेक्टर बनाया गया और सन 1997 के मध्य तक परियोजना के हर पहलू को समय सीमा के अंतर्गत ही पूरा कर लिया गया। दिल्ली मेट्रो की सफलता और समय-सीमा के अंतर्गत कार्य करने की जो संस्कृति श्रीधरन ने विकसित की उसके बाद मीडिया में उनके नाम और उपलब्धियों के बहुत चर्चे हुए और उन्हें 'मेट्रो मैन' की अनौपचारिक उपाधि भी दे दी गयी। उनकी इस कामयाबी को इतना महत्वपूर्ण माना गया कि फ्रांस की सरकार ने सन 2005 में उन्हें 'नाइट ऑफ़ द लीजन ऑफ़ हॉनर' से सम्मानित किया। भारत सरकार ने भी उन्हें सन 2008 में 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया। उन्हें 2005 में सेवा निवृत्त होना था पर सरकार ने उनके कार्यकाल को आगे बढाकर मेट्रो के दूसरे फेज की समाप्ति तक कर दिया। 16 साल की सेवा के बाद इ. श्रीधरन 31 दिसम्बर 2011 को दिल्ली मेट्रो से सेवानिवृत्त हो गए।

कोच्ची मेट्रो

दिल्लि मेट्रो से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्हें कोच्ची मेट्रो रेल प्रोजेक्ट का मुख्य सलाहकार नियुक्त किया गया। सन 2013 में उन्होंने कहा कि कोच्ची मेट्रो अपने निर्धारित समय लगभग तीन साल में पूरी हो जाएगी।

दूसरी मेट्रो परियोजनाएं

श्रीधरन को लखनऊ मेट्रो रेल का भी मुख्य सलाहकार नियुक्त किया गया है। उन्होंने जयपुर मेट्रो को भी अपना बहुमूल्य सलाह दिया और देश में बनने वाले दूसरे मेट्रो रेल परियोजनाओं के साथ भी वे जुड़े हुए हैं। इनमें शामिल हैं आंध्र प्रदेश की दो प्रस्तावित मेट्रो परियोजनाएं - विशाखापत्तनम और विजयवाड़ा। **स्रोत** - www.itshindi.com.

श्री संजय कुमार